समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र के साथ संबंध

समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र के साथ संबंध को समझने से पहले यदि हम अर्थशास्त्र को समझ ले तो इसे विषय वस्तु को समझने में आसानी होगी। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं या आर्थिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र का अध्ययन भौतिक वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग से संबंधित व्यक्ति के व्यवहार से है। अर्थशास्त्र में मानव के आर्थिक क्रियाओं का जबकि समाजशास्त्र में सामाजिक जीवन के सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र घनिष्ट रूप से एक दूसरे से संबंधित है। कॉम्टे, जे॰ एस॰ मिल, पैरेटो, वेबलिन, कार्ल मार्क्स, मैक्स वेबर आदि विद्वानों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है कि ये दोनों विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। इनका आपस में घनिष्ठ संबंध है।

व्यक्ति की सामाजिक क्रियाओं और व्यवहार पर आर्थिक परिस्थितियों का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। मैकाइवर के अनुसार आर्थिक घटनाएं सदैव सभी प्रकार की सामाजिक आवश्यकताओं एवं क्रियाओं के द्वारा निर्धारित होती है और बदले में स्वयं भी निरंतर सभी प्रकार की सामाजिक आवश्यकताओं तथा क्रियाओं का पुनर्निर्धारण, सृष्टि, संगठन एवं रूपान्तरण करती रहती है।

भौतिक साधनों को जुटाने के दौरान मनुष्य अन्य व्यक्तियों, समूहों, समाजों आदि के संपर्क में आता है। इस प्रकार उसकी आर्थिक क्रियाएँ बहुत अंशों में सामाजिक क्रिया हो जाती है। आर्थिक क्रिया सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों से संचालित होती है। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र ऐसी समस्याओं का अध्ययन करते है जो एक दूसरे के क्षेत्र के अन्तर्गत आते है। जैसे — औद्योगीकरण, नगरीकरण, ग्राम समस्याएं, ग्राम कल्याण, बेकारी, निर्धनता, ग्रामीण समस्याएं ग्रामीण पुनर्निर्माण, आदि। इन समस्याओं पर जब तक न तो ठीक से समझा जा सकता है और न ही इन्हे हल किया जा सकता है।

इसप्रकार, वर्तमान समय में अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में दिन-प्रतिदिन सहयोग बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आधारभूत इकाई की कड़ी मानव है जिसके जीवन का अध्ययन दोनो ही करते है।

Smita Kumari